गुण और पर्याय

द्रव्य, गुण और पर्याय स्पिनोजा के दर्शन के आधार स्तंभ हैं| स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य वह है जिसकी स्वतंत्र सत्ता हो और जिसके ज्ञान के लिए किसी अन्य पदार्थ के ज्ञान की अपेक्षा ना हो| गुण द्रव्य के स्वरूप धर्म अर्थात वे धर्म जिनको बुद्धि द्रव्य का स्वरूप समझती है| पर्याय अथवा प्रकार द्रव्य की परिणामी धर्म हैं|

द्रव्य के विषय में देकार्त ने दो प्रकार का द्वैत माना था- एक तो पर द्रव्य और अपर द्रव्य का द्वैत, और दूसरा चेतन द्रव्य और विस्तृत द्रव्य का द्वैत| स्पिनोजा ने चेतन द्रव्य और विस्तृत द्रव्य का द्वैत का संशोधन इस तरह से किया कि उसने इस ट्वीट को द्रव्य के स्तर से उतारकर गुण के स्तर पर रख दिया, अर्थात चेतन द्रव्य और विस्तृत द्रव्य का तात्विक द्वैत स्वीकार न करके केवल चैतन्य गुण और विस्तार गुण का गौण द्वैत स्वीकार किया| स्पिनोजा ने चित्त और अचित् को द्रव्य के पद से उतारकर गुण के पद पर बैठा दिया| उनके अनुसार चित् और अचित् दोनों ईश्वर के गुण हैं चित् का अर्थ चैतन्य और अचित् का अर्थ विस्तार है| स्पिनोजा के अनुसार देह और आत्मा द्रव्य नहीं है, यह ईश्वर के विस्तार और चैतन्य नामक गुण हैं, जो दो समानांतर धाराओं के रूप में बह रहे हैं|

स्पिनोजा की परिभाषा के अनुसार ' गुण वे धर्म हैं जिनको बुद्धि द्रव्य का स्वरूप समझती है|' गुण द्रव्य के स्वरूप धर्म हैं| निरपेक्ष और स्वतंत्र होने के कारण द्रव्य स्वतंत्र बुद्धिगोचर नहीं है| इसलिए स्पिनोजा ने द्रव्य को निर्गुण, निरविशेष और अनिर्वचनीय माना है| गुणों के कारण ही द्रव्य सगुण, सविशेष और बुद्धिग्राह्य बनता है| द्रव्य अनंतधर्मात्मक है| ईश्वर समस्त गुणसंपन्न है| ईश्वर के अनंत गुण हैं किंतु मानव केवल दो ही गुणों को जानता है जो उस में विद्यमान है| ये दो गुण हैं- चैतन्य और विस्तार|| चित-अचित् , पुरुष- प्रकृति, जीव- जगत- इनको द्रव्य मानना भूल है| ये ईश्वर के गुण, धर्म या विशेषण मात्र हैं| चित् का अर्थ है चैतन्य और अचित का अर्थ है विस्तार| ईश्वर द्रव्य है; यह उनके गुण हैं| ईश्वर विशेष्य हैं; ये उनके विशेषण हैं | ईश्वर आत्मा है, यह शरीर हैं| एक ही ईश्वर की दो गुण होने के कारण इनको परस्पर विरुद्ध नहीं माना जा सकता| देकार्त ने इनको परस्पर विरुद्ध और परस्पर निरपेक्ष द्रव्य मान कर द्वैतवाद की जो भूल की थी, उसे स्पिनोजा ने मिटा दिया| एक ही द्रव्य के गुण होने से इनके परस्पर विरोध का प्रश्न नहीं उठता| यह परस्पर भिन्न अवश्य हैं, किंतु विरुद्ध नहीं| दोनों ही अपनी सत्ता के लिए ईश्वर पर निर्भर हैं और ईश्वर से पृथक नहीं है| द्रव्य के साथ इनका तादात्म्य या अपृथकसिद्धि का संबंध है| ये ईश्वर के अंतर्गत हैं और बिना ईश्वर के इनकी कोई सत्ता नहीं है | जड़ और चेतन, एक ही ईश्वर के विभिन्न रूप हैं एक ही प्रकाश के दो किरणें हैं| दोनों भगवत सत्ता से भाषित हो रहे हैं| दोनों के पारस्परिक सहयोग यह क्रिया प्रतिक्रिया की आवश्यकता नहीं है| इनमें कार्य कारण संबंध नहीं है, पारस्परिक संगति मात्र है एक घटना दैहिक और आध्यात्मिक दोनों है| जड़ की दृष्टि से दैहिक और चेतन की दृष्टि से आध्यात्मिक| दोनों का उद्गम एक ही ईश्वर है| यह स्पिनोजा का चित् अचित् समानांतरवाद है| एक ही उद्गम से निकलने वाली ये दो धाराएं समानांतर बह रही हैं|

स्पिनोजा के 'गुण' के संबंध में विद्वानों में बहुत अधिक विवाद है| गुणों की सत्ता वास्तविक है या काल्पनिक? गुण ईश्वर के सत्य धर्म हैं या मानवीय बुद्धि के आरोप? गुण ईश्वर के परिणाम है या विवर्त? स्पिनोजा ने गुण की जो परिभाषा दी है उसके दो भिन्न अर्थ लगाए गए हैं| परिभाषा है- 'गुण वे धर्म है जिनको बुद्धि द्रव्य का स्वरूप समझती है|' इस परिचभाषा में यदि ' द्रव्य का स्वरूप' इन शब्दों पर आग्रह हो, तो गुण द्रव्य की तात्विक या वास्तविक या सत्य धर्म है| इसी परिभाषा में यदि ' बुद्धि समझती है' इन शब्दों पर आग्रह हो, तो गुण मानवीय बुद्धि के काल्पनिक आरोप हैं| कूनो फिशर के अनुसार स्पिनोजा के गुण ईश्वर के सत्य धर्म या परिणाम हैं| हेगल के अनुसार स्पिनोजा के गुण मानवी बुद्धि के काल्पनिक आरोप या ईश्वर के विवर्त हैं| स्पिनोजा ने गुणों को सापेक्षतया अनंत और द्रव्य को निरपेक्षतया अनंत कहा है| द्रव्य में वस्तुतः गुण नहीं हैं| हमारी सविकल्प बुद्धि के द्रव्य पर आरोप मात्र हैं| ऐसा मानने पर ही स्पिनोजा की प्रसिद्ध उक्ति- 'प्रत्येक विशेषण निषेधात्मक है' चरितार्थ होती है| इसके विपरीत कूनो फिशर का मत है कि स्पिनोजा गुणों को ईश्वर के धर्म मानते हैं| स्पिनोजा के अनुसार गुण वस्तुत: ईश्वर के 'स्वरूप' हैं केवल उनकी सत्ता ईश्वर से पृथक नहीं है| प्रत्येक विशेषण निषेधात्मक है- युक्ति का यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर निरविशेष या निर्गुण है, इसका अर्थ यह है कि ईश्वर असीम या अपरिछिन्न है अर्थात गुण ईश्वर को सीमित या परिछिन्न नहीं कर सकते| स्पिनोजा ने विश्व के सत्यत्व का बारंबार साग्रह प्रतिपादन किया है| उनका तात्पर्य इतना ही है विश्व का सत्यत्व ईश्वर पर निर्भर है और उनसे से पृथक नहीं|

स्पिनोजा के पर्याय या प्रकार द्रव्य के परिणामी धर्म हैं| परिणाम से तात्पर्य है विवर्त का पर्याय का अर्थ है द्रव्य का विकार| द्रव्य स्वयं तो अद्वितीय, नित्य, शाश्वत, अपरिणामी और अविकारी है, किंतु गुणों के कारण अनेक, अनित्य, परिणामी और विकारी प्रतीत

होता है| पर्याय द्रव्य के आगंतुक धर्म है, वास्तविक नहीं| और ये धर्म गुणों के माध्यम से ही संभव होते हैं| द्रव्य निरपेक्ष है, पर्याय सापेक्ष| द्रव्य स्वतंत्र है, पर्याय परतंत्र| द्रव्य अद्वितीय है, पर्याय आने| द्रव्य नित्य है, पर्याय अनित्य| द्रव्य अनिवार्य है, पर्याय संभाव्य| द्रव्य समुद्र है, पर्याय तरंग| बिना द्रव्य की पर्यायों का अस्तित्व या ज्ञान नहीं हो सकता| पर्याय सर्वदा द्रव्य पर आश्रित हैं| द्रव्य की अनंत गुणों में से मानवी बुद्धि केवल चैतन्य और विस्तार को जान पाती है| चैतन्य के पर्याय हैं बुद्धि और संकल्प| विस्तार के पर्याय हैं गति और स्थिति| पर्याय दो प्रकार के हैं- अनंत या नित्य और सांत या अनित्य| ईश्वर के शरीर के रूप में पर्याय अनंत और नित्य है| रूप में पर्याय सांत और अनित्य हैं| विविध जीव चैतन्य गुण के पर्याय हैं और विविध जड़ पदार्थ विस्तार गुण के पर्याय हैं| चैतन्य के रूप में बुद्धि तथा संकल्प अनंत और नित्य हैं, किंतु विविध जीवो के रूप में सांत और अनित्य| विस्तार के रूप में गति तथा स्थिति अनंत और नित्य हैं, किंतु विविध जड़ पदार्थों के रूप में सांत और अनित्य|